तृतीय अध्याय
नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी के रूप

तृतीय अध्याय : नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी के रूप

आदिकाल से लेकर आज तक साहित्य में नारी के विविध रूपों का चित्रण हुआ है। "घृतकुम्भसमा नारी तप्तागार सम: पुमान।" [1] नारी को घी की उपमा दी गई है। तथा पुरूष को जलता हुआ अंगारा कहा है। दोनों के सहयोग से ही ज्वाला प्रज्वलित हो उठती है। अर्थात दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। नारी के अभाव में पुरूष अधूरा है और पुरूष के अभाव में नारी को पूर्णत्व प्राप्त नहीं हो सकता। एक दूसरे के साथ रहकर और एक दूसरे के बिना भी नारी को विविध रूपों को स्वीकार करना पड़ता हैं।

नारी को संभोग और संतान की इच्छा पूर्ण करनेवाली मादा मानने के कारण ही नारी को हर वक्त बंधनों में रहकर जीना पड़ता है। अपने ऊपर थोंपे बंधनों को न ठुकरा पाने के कारण ही वह विद्रोही वन जाती है। रघूवीर सिन्हा लिखते है "नारी कथाकारों में मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती ने नारी के प्रेम के परिवर्तित स्वरूप, बदलते संबंधों नए नैतिक मानदंडों और नए प्रतिमानों की अनेक कहानियाँ लिखी। अत: नई चेतना और अपने समय की नई भूमिकाएँ लिए नारी के नए-नए रूप उभरे हैं।"[2] नारी लेखिकाओं ने अपने समय की नारी का यथार्थ चित्र अंकित किया हैं। उसमें नासिरा भी अग्रणी है।

कहानी के हर किस्त में मुस्लिम नारी के व्यकित्व का कोई-न -कोई पक्ष उद्‌घाटित होता चलता है। असहाय नारी विषम परिस्थितियों में, किन पीड़ाओं को झेलने के लिए विवश है इसका मार्मिक चित्रण नासिरा की कहानियों में दिखाई देता है। मुस्लिम परिवेश में रहने के कारण मुस्लिम नारी के रूपों को चित्रित करते समय एक प्रकार की यथार्थता और सार्थकता प्रतीत होती है।

नारी को पारिवारिक संवंधों का वोझ ढोते-ढोते कभी ईर्ष्या, द्‌वेष, प्रेम, अपनापन का सामना करना पड़ता है तो कभी-कभी उसका सामना करते-करते उसमें वैचारिक परिवर्तन भी होता है और वह कभी विद्रोही वन जाती है; तो कभी स्वाभिमानी। नारी के ऐसे विविध रूपों का अंकन नासिरा ने अपनी कहानियों में किया हैं।

3.1. बेटी :

नारी के विविध पात्रों में से बेटी एक रूप है | 'इब्ने मरियम' कहानी की सुगरा और कुबरा अपने पिता की तरफ हँसते, उन्हें चिढ़ाते नहीं देख सकती हैं |

भोपाल दुर्घटना के बाद ताहिर की बेटी सुगरा को ससुरालवाले स्वीकार नहीं करते तब ताहिर पागल बन जाता है | उसके पीछे बच्चे भागते हैं | फिल्मवाले ताहिर को कुछ खिला-पिलाकर उसे रोककर उस पर फिल्म बनाते हैं | लेकिन यह कुबरा और सुगरा को अच्छा नहीं लगता | वह उन्हें लेने जाती हैं | लेकिन ताहिर उन्हें पहचानता नहीं | जिससे अपमानित होकर घर वापस आना पड़ता है | ताहिर शाम को मस्जिद की सीढ़ियों पर सो जाता है | सुगरा और कुबरा पीछले एक साल से ताहिर को अपनी पहचान दिखाने की कोशिश कर रही हैं लेकिन वह उन्हें नहीं पहचानता | फिर भी अपने बाप को अकेले छोड़ना अच्छा नहीं लगता | साल भर से वह दोनों वहनें अकेली रहती आई हैं | उनके लाख समझाने पर भी ताहिर को कुछ याद नहीं आता |

अपना बाप ही मर गया है, ऐसा सोचकर वह दोनों अपना जीवन बीता सकती थी | लेकिन वह दोनों रोज सुबह अपने पिता को मनाने, उन्हें देखने मस्जिद में जरूर जाती हैं | सुगरा सपने में अपने पिता को ठंड से ठिठुरते देखकर रोती है | वह सिर्फ सपने में ही नहीं हकीकत में भी रो पड़ती है |

'चार बहनें शीश महल की' कहानी में शरीफ की दुकान जल जाने से उसका कारोबार बंद हो जाता है | पचास साल से की कमाई पिता करीम की दवाईयों में ही चली जाती हैं | जिससे शरीफ अकेला पड़ जाता है | पिता को लकवा मारने से वह घर में रह जाते हैं | ऐसे वक्त में शरीफ की चारों बेटियाँ चूड़ियों की नई-नई ड़िजाइनें बनाकर उन्हें वेचने खुद दुकान में वैठ जाती है | पिता की मदद करके फिरसे अपने दुकान की ख्याति वापस लाती है | तथा अपने घर को मुसिवत से बाहर निकालने में मदद करती हैं | यहाँ मुस्लिम नारी पात्र अपने कर्तव्यों को निभाते हैं | घर की परंपरागत दहलीज को पार कर स्वावलंबन अपनाती है |

3.2. प्रेमिका :

नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में नारी के प्रेमिका रूप का भी अंकन किया है | जिसमें विरोधाभास है | 'संगसार' कहानी की आसिया है जो शादी के वाद किसी

गैर मर्द से प्रेम करती है | तो दूसरी 'शामी कागज' की पाशा है वह जिससे प्यार करती है उसके साथ ही शादी करती है | लेकिन दोनों भी अपने प्रेमी के साथ वफादार रहती हैं |

'संगसार' कहानी की आसिया शादी के बाद अफजल से संबंध रखकर खुश नहीं है | तभी वह किसी और से प्यार करने लगती है | घर में माँ-बहन के समझाने का उसपर कोई असर नहीं होता | एक दिन अफजल उसे ससुराल ले जाता है | अफजल के विदेश चले जाने के बाद वह अपने प्रेमी से मिलने जाती है | तभी उसे जनाकारी के जुल्म में पकड़ा जाता है | प्रेमी को उसके दोस्त छुड़ाते हैं | लेकिन उसे मौत की सजा हो जाती है | उसे अपना गुनाह कबूल करने को कहा जाता है | लेकिन वह उसका गुनाह नहीं मानती | जिसको वह कबूल नहीं करती | उसे उसके प्रेमी का नाम पूछा जाता है | उसे सजा न हो इसलिए वह उसका नाम भी नहीं बताती |

मौत की सजा देने से पहले आसिया को उसकी आखरी ख्वाहिश पूछी जाती है | तब वह अपने प्यार को एक बार देखना चाहती है | आसिया अंत तक अपने प्रेमी के साथ वफादार रह जाती है |

'शामी कागज' की पाशा मोहसिन से शादी से पहले तीन साल से प्यार करती है | लेकिन शादी के सात महिने बाद ही वह विधवा हो जाती है | मोहसिन के मरने के सात दिन पहले वह पाशा से मिला था | विधवा हो जाने के बाद वह अपने पति मोहसिन की याद के रूप में भगवान से बेटा माँगती है | वह कहती है - "खुदाया! मुझे लड़का देना | एकदम मोहसिन की तरह, वही आबरू, वही हँसी, वही आँखे... मैं पूरी जिंदगी बिना किसी शिकवे के काट दूँगी |"[3] वह सारी जिंदगी बेटे के साथ बिताने के बारे में सोचती है | पति मोहसिन से बिछुड़ने से वह पागलों जैसी हरकतें करती हैं | मोहसिन के मरने के बाद भी उसकी आँखों से न आँसू निकलते हैं न चेहरे पर हँसी आती हैं | कभी नल के नीचे भीग जाती है तो कभी बारिश में भिगकर बेहोश हो जाती है |

वह अपना दिल बहलाने के लिए नर्सरी में नौकरी करती है | लेकिन दूसरी शादी करके घर नहीं बसाती | वह मोहसिन की यादें, उसका स्पर्श अपने पास सँभलकर रखती है | लाख समझाने पर भी वह अपनी मोहब्बत को दूसरे में नहीं बाँटना चाहती | वह अकेले जीवन बीताना पसंद करती है | लेकिन अपनी मोहब्बत को भूलना नहीं चाहती | यहाँ नासिरा के नारी पात्र प्यार से वफादार रहते हैं |

3.3. पुत्र प्राप्ति की आस रखनेवाली :

आज के आधुनिक युग में भी नारी को शादी के वाद संतान न होने पर विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं | हर समाज के लोगों के ताने सुनकर उसकी मानसिकता में परिवर्तन आ जाता है | विज्ञान के अनुसार भले ही संतान के लिए पुरूष को दोषी माना गया हो; लेकिन पुरूष प्रधान संस्कृति में यह वात नहीं मानी जाती | अत: नारी को ही दोषी ठहराया जाता है | नि:संतान होने के कारण पुरूष की दूसरी शादी हो जाती है लेकिन उस समय नारी की दूसरी शादी करने के वारे में किसी के मन में विचार तक नहीं आता |

'बावली' कहानी की सलमा ने हालातों का सामना करते हुए एम.ए. तक की पढाई की | ख्वालिद के साथ शादी हुई | शादी के सात साल तक उसे बच्चा न हुआ | परिणामत: उसे जमाने के ताने सुनने पड़ते हैं | पहले आस-पड़ोसवाले ताने देते हैं | बाद में ख्वालिद की अम्मा भी पोते को गोद में खिलाने के अरमान निकालने लगती है | वह भी चाहती है कि जल्दी से वच्चे को जन्म दें | ख्वालिद पहले अम्मा की वातों से गुस्सा हो जाता था लेकिन वाद में वह भी ख्वामोश रहता है | उनकी ख्वामोशी का मतलव था कि वह भी अव वच्चा चाहने लगा हैं |

वच्चों के वारे में सोच विचार कर सलमा की निंद हराम हो जाती है | रात-रात भर जागकर वह अपने भविष्य तथा परिवार के बारे में सोच रही थी | भविष्य के बारे में सोचकर उसकी आँखे भर आती थी | ख्वालिद भी उसकी परेशानी जानता है | ख्वालिद से गम छुपाने के लिए वह चुपचाप रो लेती है | ऊपर से कितनी भी खुश दिखाने की कोशिश क्यों न करें; लेकिन सलमा अंदर ही अंदर टूट जाती है | अम्मा के कहने पर वह ख्वालिद की दूसरी शादी करने के प्रस्ताव में हाँ में हाँ मिलाती है | कोई भी औरत यह नहीं चाहती की उसके प्यार का वँटवारा हो | वह अपने पति का पूरा प्यार चाहती है | लेकिन मजवूरन सलमा को ख्वालिद की दूसरी शादी के लिए तैयार होना पड़ता है | साथ ही वह इस शादी के वाद नया रास्ता सोचती है कि "जो एकदम नया हैं... उस पर चलकर देखूँ-सिर्फ अपने लिए जिकर देखूँ-विना किसी लगाव-दान-बलिदान की हद सिर्फ सलमा के घेरे तक रख के देखूँ - अपने वजूद के लिए साँस लेकर देखूँ-देखूँ यह तजुर्बा कैसे रहता है?"[4] सलमा शादी के वाद सात साल में बच्चा न होने के कारण जिंदगी से वह तंग आ गई है | वह आजतक दूसरों के लिए जीती आई है | लेकिन अब वह अपने

लिए जीना चाहती है | उसे लगता है कि शायद यह तजुर्बा उसे चैन की साँस लेने देगा | वह शांति से जीवन बीताना चाहती है |

ख्वालिद भी मन में अपने बेटे, अपने खून की आस लगाए था | वह सलमा से कहता है - "अम्मा का इसरार, उनका इकलौता बेटा हूँ, तुम मेरी इकलौती मोहब्बत हो मगर...|"[5] ख्वालिद अम्मा को दुख नहीं देना चाहता और न ही सलमा से बिछुड़ना चाहता है | लेकिन वह अपने घर का चिराग चाहता है | जो उसके खान्दान की निशानी हो | हर कोई अपने घर के लिए चिराग चाहता है |

अंतत: सास की इच्छा के खातिर सलमा पति को दूसरी शादी के लिए तैयार करती है | इतना ही नहीं लड़की पसंद करके पति की दूसरी शादी भी कराती है | इतनी भयावह स्थिति से सलमा जैसी मुस्लिम नारी जुझती है और पुत्र प्राप्ति की आस अपनी सौत से लगा बैठती है |

3.4. माता के रूप में :

माता को देवी के रूप में माना जाता है | उसे पूजा जाता है | मनुस्मृति में माता के बारे में कहा है - "उपाध्यायान्दशायं आचार्याणं शत पिता | सहस्त्र तु पितृज् माता गौरवणाति रिच्यते |"[6] अर्थात् - भारतीय नारी को हम प्रमुखत: तीन रूपों में देखते हैं-माता, कन्या भार्या | माता के रूप में नारी की अंतिम अवस्था नारी-साधना से प्राप्त होती है | नैतिक एवं आर्थिक प्रगती में नारी का योगदान महत्त्वपूर्ण है | माता गौरवान्वित है क्योंकि सिर्फ वही सौ-सौ पुत्रों को जन्म देती है | पालन-पोषण तथा संस्कार करती हैं |

'मातृत्व के अभाव में नारी का मन विकृतियों से भर जाता है |'[7] लेकिन व्यक्तिगत उन्नती की दृष्टि से आजकल की नारी मातृत्व को जल्दी स्वीकार करना नहीं चाहती | 'अपनी कोख' कहानी की साधना पढ़ना चाहती है लेकिन सरिता के जन्म के साथ वह सबकुछ भूलकर बेटी की परवरिश में लग जाती है | अपनी बेटियों को पढ़ाकर अफसर बनाने का सपना देखती है | 'बावली' कहानी की सलमा को जब पता चलता है कि वह माँ बनने वाली है | तो वह सुकून पाती है कि कम-से-कम उसमें मातृत्व प्रदान करने की क्षमता तो है क्योंकि माँ न बन पाने के कारण उसे अपने पति की दूसरी शादी करा देनी पड़ती है |

'शामी कागज' कहानी की पाशा भी पति के मरने के बाद खुदा से सिर्फ बच्चे की ख्वाहिश रखती है | जिसके सहारे वह सारी जिंदगी गुजारने का ठान लेती है

। 'पाँचवा बेटा' कहानी की अमतुल के चार बेटे हैं। जो महानगर में बस गए हैं। अकेले रहने से अमतुल के स्वभाव में परिवर्तन आया है। कौन अच्छा? कौन बूरा? इसे वह पहचान नहीं पा रही है। उसकी सहेली का बेटा सुलाखी उसे अपनी माँ की तरह मदद करता है। उसके हर संकट के समय वहीं साथ देता है। लेकिन आँखों पर उसने जो बूरी पट्टी लगाई है। उस पट्टी को वह निकाल नहीं पाती लेकिन जब वह पट्टी निकल जाती हैं तब उसकी आँखों से आँसू बहते हैं। उसका मातृप्रेम उसे खाना भी खाने नहीं देता। खाना बीच में छोड़कर वह सुलाखी से मिलने जाती है। उसके बेटें के प्रति जो मातृप्रेम हैं वही प्रेम सुलाखी के प्रति भी जागृत होता है और वह अपने पाँचवे बेटे को पहचानती हैं।

जिंदा बेटें की फिक्र तो हर माँ को होते है। बेटों का भविष्य, उसका वर्त -मान उसके लिए माँ हर कष्ट उठाने के लिए तैयार रहती है। 'तीसरा मोर्चा' कहानी की औरत के साथ जबरदस्ती की गई है। उसके बच्चों को मारा गया हैं। वह स्वयं संकट में होकर भी अपने मरे हुए बच्चों को दफनाने की चिंता उसे है। वह माँ है जिससे अपने बच्चों को सड़ने को छोड़ नहीं सकती। 'संगसार' कहानी की आसिया शादी के बाद कुछ दिनों के लिए आती है। लेकिन वापस ससुराल नहीं जाना चाहती क्योंकि वह किसी ओर से प्यार करती है। जिस कारण आसिया की माँ को अपनी बेटी के वैवाहिक जीवन की फिक्र लगी रहती है। संतोष दीक्षित लिखते है - "जैसे फूल के बरतन गिरने से आवाज होती है वैसे ही लड़कियों के भी पथ से गिर जाने पर काफी जोरों की आवाज होती है और कानों कान उसकी खबर पूरे समाज में फैल जाती है।"[8] इसलिए आसिया की माँ को अपनी बेटी के पथ से गिर जाने का डर है। एक बार उसके पथ से गिर जाने पर समाज उसे ठीक से जीने नहीं देगा और उसका वैवाहिक जीवन भी नष्ट हो जाएगा। इसलिए वह अपनी बेटी को ऐसा गलत कदम उठाने नहीं देती। इसलिए उसे वह समझाती है। लेकिन वह कुछ भी नहीं समझ पाती। तब आसिया की माँ अपनी बेटी आसमा और बहन को आसिया को समझाने लिए कहती है।

आसिया को समझाने पर भी वह कुछ नहीं समझ पाती। और एक दिन अवैध संबंध रखने के जुर्म में जेल जाती है। तब उसे मौत की सजा दी जाती है। आसिया की माँ और बहन ने कोर्ट में रहम की अर्पाल की। अपने बच्चे कितने भी बड़े क्यों न हो माँ के लिए वह छोटे ही होते हैं। माँ का हृदय बच्चों की खुशी से भर जाता है। लेकिन दुख में दुखी हो जाता है। आसिया की माँ बेटी की सजा सुनकर टूट जाती है। रहम के

लिए दौड-धूप करती है | बच्चे कितना भी बड़ा गुनाह क्यों न करें माँ को अपना बच्चा बेगुनाह ही लगता है | एक घायल माँ को नासिरा ने चित्रित किया है जिसके हृदय में दया, चिंता और परेशानियाँ भरी है |

3.5. सौतन :

विवेच्य कहानियों में प्राप्त नारी के विविध रूपों में सौतन के रूप में भी नासिरा ने नारी का चित्रण किया है | 'बावली' कहानी की सलमा नि:संतान होने के कारण घर में उसके पति खालिद की दूसरी शादी के बारे में सोचा जाता है | उस शादी में वह स्वयं हिस्सा लेती है और अपने लिए सौत लाती है | तब सलमा के मन में अपनी सौतन के प्रति कोई ईर्ष्या नहीं है | लेकिन उसे अपने भविष्य की चिंता सताती है | जिस कारण वह सोचती है - "कल एक और साँस, एक और चूड़ियों की झंकार, अलगनी पर फैले कपड़े में एक और जम्पर और ब्लाऊज का इजाफा |"[9] वह यह सह नहीं पाती की उसके पति के प्यार में बँटवारा हो | वह सोचती है हर जगह उसके हिस्से का बँटवारा होगा | यह बँटवारा वह सह नहीं पाती | लेकिन और औरतों की तरह वह सौतन से झगड़ा करते रहने से अच्छा देहात में जाकर रहना पसंद करती है | जिससे उसे और उसकी सौतन को तकलीफ न हो | अन्य औरतें अपनी सौतन की खुशी सहन नहीं करती | उसे तकलीफ होती है तो उसे अच्छा लगता है | लेकिन वह अपनी सौतन को तकलीफ न देकर खुद देहात में रहने के बारे में सोचती है |

शादी के समय मेहमान और औरतें सब काम छोड़कर कुछ-न-कुछ बहाना बनाकर सलमा को देखने आती हैं | सभी सलमा को बावली समझ रहे थें - "सुना तो मैंने भी यही है कि मिया के लिए लड़की खुद ढूँढी है, फिर तो बावली कहना ही ठिक है |"[10] उसी प्रकार सलमा भी बच्चे की ख्वाहिश पूरी करने के लिए अपने ही घर में सौतन लाती है | जिससे पति के लिए लड़की ढूँढने वाली सलमा, बावली ही ठहर जाती है |

3.6. सास :

नासिरा ने अपनी कहानियों में अन्य रूपों के साथ सास का रूप भी चित्रित किया है | वह रूप जो पोते के लिए तड़पता है | 'बावली' कहानी की सलमा की सास बेटे को सात साल बाद भी कोई औलाद न होने पर पोते की रट लगाती है | बेटे की दूसरी शादी के बारे में सोचती है | लेकिन जब बेटा ही दूसरी शादी के लिए तैयार नहीं होता तब वह बहू सलमा को अपने बेटे को दूसरी शादी के लिए तैयार करने को कहती है और

सलमा को साथ लेकर बेटे की दूसरी शादी कराती है | डॉ.चिकुर्डेकर के अनुसार "भारतीय परिवार में परंपरानुसार वधु विवाह के बाद पतिगृह में प्रवेश करती है तब वह मात्र पति का ही नहीं, परिवार के अन्य सभी सदस्यों का भी मान, आदर रखती हैं | इनमें सास-बहू संबंधों को अधिक महत्त्व दिया जाता है | परिवार में सास-बहू के बीच माँ-बेटी का रिश्ता बन जाता है तब परिवार में हर्षोल्लास रहता है |"[11] भारतीय परिवार में अन्य रिश्तों के साथ-साथ सास-बहू का रिश्ता जादा मायने रखाता है | इसलिए सास-बहू के संबंध को महत्त्वपूर्ण माना गया है | उनके संबंध माँ-बेटी जैसे रहने पर घर में आनंदोपलब्धि अनायास हो जाती है | खालिद की अम्मा और सलमा में भी माँ-बेटी जैसे संबंध बन गए थे | जिस कारण अम्मा के समझाने पर सलमा अपने पति को दूसरी शादी के लिए तैयार करती है |

'अपनी कोख' कहानी के संदीप की माँ अपनी पहली पोती होने पर दूसरी बार पोते की आशा रखती है | अपने घर के चिराग के रूप में पोते की आशा रखना स्वाभाविक है | बेटा घर का चिराग होता है और बेटी पराया धन होती है | इस परंपरागत सोच के कारण ही अम्मा दूसरी बार लड़की होने के बारे में सुनकर वह उसे 'एबॉर्शन' करने को कहती है | लेकिन साधना अपनी प्रतिरूप साधना को, अपनी बच्ची को मारना नहीं चाहती | वह 'एबॉर्शन' करने से इन्कार करती है | तब सास के बरताव में परिवर्तन आ जाता है | वह छोटी सरला को ठीक से नहीं देखती | तब साधना सास को बताती है कि अगली बार बेटी होने पर वह उसका 'एबॉर्शन' कराएगी | पोते की आस पाकर वह फिर से प्यार का बरताव करती है |

3.7. विधवा नारी :

पति के मृत्यु के बाद पाश्चात्य नारी परावलंबी बन जाती है | फिर चाहे वह आर्थिक दृष्टि से हो या फिर सुरक्षा की दृष्टि हो | अगर वह नारी कम उम्र की युवती हो तो उसे अनेक यातनाओं को झेलना पड़ता हैं | कम उम्र की विधवा होने पर उसकी दूसरी शादी के बारे में सोचा जाता है | लेकिन 'शामी कागज' कहानी की पाशा शादी के सात महिने बाद विधवा हो जाती है | जिससे सभी को उसकी फिक्र लग जाती हैं | मोहसिन से बिछुड़ने से वह पागलों जैसी हरकतें करने लगती हैं | कभी नल के नीचे भीग जाती है; तो कभी बारिश में भीगकर बेहोश हो जाती है | वह अपना जीवन बीताने के लिए सिर्फ एक बच्चे की ख्वाहिश रखती हैं | जिसके साथ वह जीवन बीता सके | लेकिन उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो जाती | तब वह नर्सरी में नौकरी करके बच्चों के साथ अपना दिल बहलाती

हैं | लेकिन वह दूसरी शादी नहीं करती | जब महमूद पाशा को नई जिंदगी शुरू करने के वारे में वताता हैं, तो पाशा जवाव देती है - "कोई जरूरी है, एक वार जी जिंदगी को दोबारा दोहराया जाए?... नौकरी कर रही हूँ | खाने-भर का कमा लेती हूँ | बुढ़ापे में जब बदन थक जाएगा तो सात भाई-बहनों की इस बहन को किसी के घर में सिर छुपानेकी जगह मिल ही जाएगी | कोई निकालेगा नहीं, मुझे इसका यकीन हैं |"[12] हर विधवा एक बार जी हुई जिंदगी दोबारा जीना पसंद नहीं करती | वल्कि उस बीती जिंदगी की यादों में जीना पसंद करती हैं | पाशा भी अपनी नौकरी से खुद का खर्चा चला रही हैं | वह किसी पर भी बोझ या निर्भर नहीं है | उसे यकीन है कि सात भाई-बहनों में कोई-न-कोई बुढ़ापे में सहारा देगा |

इस तरह स्वाभिमान को वचाए रखकर पाशा लाचार बने बिना अपना वैधव्य स्वीकार करके जीवन वीतातती है | डॉ.विमल वर्मा आधुनिक विधवा नारी के बारे में कहती है - "परिणामस्वरूप आधुनिक विधवा अव जीवन सहज स्वाभाविक रूप में जीने का अवसर पाने की स्थिति में आ रही है |"[13] पहले विधवा को अपना सारा जीवन दूसरे पर निर्भर रहकर वीताना पड़ता था | लेकिन आज आधुनिक युग में विधवा दुर्बल न बनकर सबल बन रही हैं | वह स्वयं नौकरी-व्यवसाय करके अपना खर्चा उठाती हैं | उसके विधवा रूप में परिवर्तन हो रहा है |

3.8. परंपराओं की शिकार नारी :

नारी के विविध रूपों के बारे में अगर विचार करें तो परंपराओं की शिकार नारी का रूप पढ़ने में कुछ नया नहीं है | यहाँ बाप-दादाओं से चली आई परंपराओं का पालन करते जीवन बीताया जाता हैं | 'पत्थर गली' कहानी की फरीदा के परिवार में भी उन रूढ़ि-परंपराओं का पालन किया जाता हैं | लेकिन घर के लोग यह नहीं कबूल करते कि बाप-दादाओं के समय की आर्थिक स्थिति और आज की आर्थिक स्थिति में अंतर हैं | उन्हें नौकरी करनी चाहिए लेकिन घर में भाई है जो नौकरी नहीं करता | बल्कि उल्टे घर में जोर-जबरदस्ती से पैसे लेकर ऐशों आराम करता हैं | उन सबका खर्चा चलाने का काम फरीदा को करना पड़ता हैं |

कृष्ण बिहारी मिश्र लिखते है - "वर्तमान परिवेश में शादी से बढ़कर नारी आर्थिक सुरक्षा चाहती है, जिससे वह जिंदगी की विकट से विकट समस्या पर दो टूक निर्णय ले सके और अपने नीचे एक पक्की जमीन पा सके और अपने स्वाभिमान की रक्षा

कर सके।"[14] आधुनिक युग में नारी नौकरी-व्यवसाय करके स्वावलंबी बनना चाहती है। जिससे उसे किसी के सामने लाचार वनना न पड़े हर समस्या का सामना करने की ताकद उसमें आए। जिसके लिए सवसे महत्त्वपूर्ण है - शिक्षा। 'पत्थर गली' कहानी की फरीदा भी शिक्षा ग्रहण करके नौकरी करना चाहती है। लेकिन उसे नौकरी करके खर्चा चलाने के वगैर घर की चीजें वेचनी पड़ती हैं।

घर की चीजों को बेचकर घर का खर्चा चलता है। इन चीजों के बेचने के लिए शकील या भाई नहीं जा सकते। क्योंकि उन्हें बाजार में पहचानने वाले मिलेगें। जिससे इनकी इज्जत कम हो जाएगी। लेकिन फरीदा को बुर्का पहन के बाजार में जाना पड़ता है। वह बी.ए. तक पढ़ाई करती है। घर चलाती है। फिर भी उसे अपना मत व्यक्त करने या फिर कुछ बोलने का हक नहीं है। यह अत्याचार सहन न कर पाने से फरीदा पागल वन जाती है।

अत: शिक्षा के कारण फरीदा नया ज्ञान प्राप्त करती हैं। जिससे इन परंपराओं में वह पीसना नहीं चाहती। वह इन परंपराओं से मुक्त होना चाहती है। लेकिन अंत तक परंपराओं की जकड़न से नहीं छूट पाती।

3.9. हिम्मतवाली नारी :

नासिरा की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूपों में सबसे अलग एक रूप है वह है हिम्मतवाली नारी। 'तीसरा मोर्चा' कहानी में स्वतंत्रता के पहले भारत में सुरक्षा पुलिस एवं फौजी कश्मीर में ही नहीं पूरे भारत देश में सुरक्षा के नाम पर अत्याचार कर रहे थें। सुंदर लड़की से तथा वहू-बेटी की इज्जत के साथ खेलते थें उन्हें बेआबरू किया जाता था। फिर भी वह औरत, औरत बनी रहना चाहती है। कश्मीर की एक युवती को उसके पति का पता पूछा गया। जब की वह एक साल से अपने पति को ढूँढ रही है। पता न बताने पर उन सुरक्षा पुलिस ने उसकी इज्जत लूटकर उसे बेहोश अवस्था में वही छोड़ दिया था।

रहमान और राहूल उसकी मदद करना चाहते है। उसे यह पूछते है कि तुम हिंदू हो या मुसलमान अगर हिंदू हुई तो राहुल की वहन और मुसलमान हुई तो रहमान की वहन। वे उसे बहन के रिश्ते से उसकी रक्षा करना चाहते हैं। लेकिन वह कहती है - " मैं एक औरत हूँ और औरत की अस्मत तो हिंदू-मुसलमान नहीं होती जो...।"[15] वह हिंदू-मुसलमान धर्म-जाति से भी नया रिश्ता बनाना चाहती है। जब राहुल और रहमान उसे

अपने साथ चलने के लिए कहते हैं, तो वह कहती है - "तुम दोनों जाओ भाई... | मैं माँ हूँ | मुझे बच्चों को दफनाना हैं ... पत्नी हूँ... मुझे अपने शौहर का इंतजार करना होगा... मुझे भागना या मुँह छुपाना नहीं है... मुझे अभी जिंदा रहना है |"[16] उसे अपने बच्चों को दफनाना हैं | पत्नी है पति का इंतजार करना है | उसे इन सब के लिए जिंदा रहना हैं |

यहाँ नासिरा की नारी परिस्थिति से भागना नहीं चाहती | बल्कि अपने कर्तव्य को पूरा करके अत्याचारों का सामना करना चाहती हैं | वह औरत बनकर जीना चाहती है | सभी अत्याचारों को सहकर भी वह हिम्मतवाली बनकर कर्तव्य पूर्ति करती है | यहाँ हिम्मतवाली नारी का चित्रण पाया जाता है |

3.10.विद्रोही नारी :

'अपनी कोख' कहानी की साधना ने परंपरा को तोड़ने का साहस किया है | डॉ.अंतरेड्डी के अनुसार - "शिक्षा के बल पर आज की नारी आवश्यकता पड़ने पर चार दिवारों की कैद से निकलकर स्वतंत्र हो रही है | उत्पीड़ित होने पर वह प्रतिशोध लेती है |"[17] शिक्षा के कारण नारी अपना भला-बूरा समझने लगी है | तथा वह अपने पर होनेवाले अन्याय का प्रतिशोध भी लेती है |

'अपनी कोख' कहानी की साधना एम.ए.के बाद आई.पी.एस्. अफसर बनना चाहती थी | लेकिन घरवालों ने उसकी जबरदस्ती संदीप से शादी की | शादी के बाद वह पढ़ना चाहती थी | उसने पढ़ाई शुरू की | तभी उसे पता चला की वो गर्भवती है | वह चुपचाप एबॉर्शन करना चाहती है | क्योंकि बच्चे के साथ पढ़ना मुश्किल है लेकिन फिर भी उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध बच्चे को जन्म देना पड़ा | पहली बच्ची सरिता के आने पर घर में उसे बहुत प्यार मिला | उसे मातृ-सम्मान मिला | लेकिन छ: महिने बाद वह फिर से गर्भवती रही | संदीप को दो ही बच्चे चाहिए थे | तीसरा बच्चा नहीं चाहिए था | जो भी हो दो ही हो | लेकिन सास पोता चाहती थी | इसलिए क्लिनिक में दूसरी बार गर्भवती रहने पर जाँच लिया गया | तब पता चला कि इस बार भी बेटी ही है | तो सास ने एबॉर्शन के लिए जिद की | जब की साधना अपनी प्रतिरूप की जान नहीं लेना चाहती थी | सास का उसके साथ घर में बरताव बदल गया | वह बात-बात पर चिढ़ती, छोटी सरिता की तरफ ध्यान न देती थी | अभी-अभी सरिता खड़ा होना सिख रही थी | वह दादी की साड़ी पकड़ खडी हुई थी कि दादी ने साड़ी को झटका दिया | जिससे वह मुँह के बल पर गिर पड़ी और होंठ

फट गया | जिससे खून निकल आया | तव साधना ने उन्हें समझाया कि तीसरी वार बेटी होने पर वह एबॉर्शन कर देगी | जिससे दूसरी वेटी का जन्म हुआ |

अव तीसरी वार साधना गर्भवती थी लेकिन संदीप तीसरा बच्चा न चाहता था | साधना ने क्लिनिक में जाकर जाँच लिया | तब पता चला कि इस बार बेटा है | उसे पता था संदीप कितना भी तीसरे बच्चे का इन्कार करें | लेकिन बेटा हो जाने पर वह खुश हो जाएगा | सास की खुशी का ठिकाना न रह जाएगा | वह एवॉर्शन करने न देगी | लेकिन उसे भय था कि अगर लड़का पैदा हुआ तो वह अपनी दोनों बहनों को निगल जाएगा | सास पोते को पाकर पोतियों का तिरस्कार करेगी और संदीप के भी खयालात बदल जाएँगे |

वह बेटियों को अपना सपना समझती है | जो पूरा करने के लिए वह सबसे बड़ा विद्रोह करती है | पेट में वेटा होने की बात वह किसी को नहीं बताती | तनाव के कारण उसका ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है | साधना की यह अवस्था देखकर संदीप उसको एबॉर्शन करने को कहता है और स्वयं नसबंदी करता है | पढ़ाई से लेकर बच्ची के जन्म तक उसने विरोध किया था | लेकिन उसकी किसी ने न सुनी | इस बार उसने उन सपनों के लिए जो उसने अपनी वेटियों के लिए देखे थे | अपने बेटे को त्यागकर सबसे बड़ा विद्रोह किया | जिसका पता सिर्फ उसको था | अन्य सब इस सत्य से अनभिज्ञ थे | बेटियों को बचाना तथा उन्हें सम्मानपूर्वक शिक्षा दिलाने के साथ परवरिश करने के लिए ही उन्होंने बेटे को जन्म नहीं दिया |

3.11.उद्योगी और व्यापारी रूप में नारी :

नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में विभिन्न मुस्लिम नारी के रूपों में उद्योग ओर व्यापार में योगदान देनेवाली नारी को भी रूपायित किया है | शिक्षा के कारण आज की नारी में परिवर्तन आया है | जिससे वह घर में चुल्हा फूँकने के साथ-साथ नौकरी तथा व्यापार कर स्वावलंबी बन रही है और घर में पिता, पति, भाई को घर सँवारने में मदद भी कर रही है |

'चार वहनें शीश महल की' इस कहानी के शरीफ और उसके अब्बा करीम चूडियों का व्यापार करते थे | एक दिन राजनीतिक झगड़े के कारण बाजार की दुकानों को आग लग जाती है | जिससे शरीफ की दुकान जल जाती है | पचास साल की मेहनत को बरबाद होते देखना करीम सह नहीं पाता और उसे लकवा मारता है | शरीफ ने अब्बा की

दवाइयों के लिए सारी पूँजी लगा दी और अब उसके सामने चारों लड़कियों की शादी की फिक्र रहती है |

तभी चारों लड़कियों ने अपने पिता शरीफ के कामों में हाथ बँटाया | 'सुहाग स्टोर' इस चूड़ी की दुकान को फिर से शुरू किया | चारों बहनें चूडियाँ बेचती थी | छोटी की ड्रॉईंग अच्छी थी | जिससे उसकी बनाई ड्रॉईंग की चूड़ी बनती और उस पर चार बहनों का ट्रेडमार्क लगता | चूडियों को नए-नए नाम भी रखे थे "झंकार, धड़कन, ईद का चाँद, प्यार का मौसम, गंगा की लहरें, तारों का शहर, खनकती शहनाई, दीवाली की रात |"[18] तिज त्यौहारों के अनुसार चूड़ियों के नाम थे, इनमें हिंदू-मुसलमान के त्यौहारों के नाम भी थे | दिल के अरमानों के अनुसार भी चूड़ियों को नाम दिए गए थे | नामों के अनुसार चूड़ियाँ बनाई गई थी |

चारों बहनों ने पिता के साथ दुकान को और भी ऊँचा उठाया | जिसे देखकर 'सुहाग स्टोर' को चार चाँद लग गए | शहर की सुहागन अब बाजार घुम-घुमकर चूड़ी पहनने के बजाय 'सुहाग स्टोर' में आती थी | पुत्तन की खाला ने कहा - "तो अब तुम लड़कियाँ यह काम करोगी? और नहीं तो क्या दादी ... दरअसल, यह काम तो औरतों का ही है, मगर हमारी दादी घर से बाहर निकली ही नहीं मदद को, वरना मर्दो से चूड़ी पहनना क्या अच्छा लगता है | मझली ने स्वर में शक्कर का कंडाल उलट दिया |"[19] लड़कियाँ भी यह जान गई थी कि उन्हें कौन-सा काम करना चाहिए | कौन-सा काम किसे करना चाहिए? चूड़ियाँ पहनाने का काम तो औरतों का ही है | पुरूषों के हाथों में हाथ देकर चूड़ी पहनने से अच्छा औरत के हाथों चूड़ी पहने |

आजकल लड़कियाँ अपनी कला तथा रूचि के अनुसार व्यापार-उद्योग कर रही हैं | स्वतंत्र रूप से वह अपना काम करने लगी है | नारी का उद्योग, व्यापार में योगदान महत्त्वपूर्ण है |

3.12. दहशत में नारी :

नासिरा नारी के विभिन्न रूपों को व्यक्त करते हुए वह डरी सहमी दहशत में रहती नारी को भी अंकित करती है | 'सवीना के चालीस चोर' कहानी की सकीना के मन में डर बैठा है | सकीना शाहरूख से कहती है - "इसलिए कि तुम्हारा बचपन अमन - चैन से गुजरा मेरा बचपन डर और दहशत से भरा हुआ, जहाँ मौत हर बार करीब आकर कहीं छुप जाती थी |"[20] सकीना के बचपन में उस इलाके में दहशत इतनी तीव्र थी कि

पता नहीं चलता था कि किस वक्त मौत आएगी | उसी दिनों सकीना का बड़ा भाई रियाज कहीं गुम हो गया था | उन्हें यह मालूम नहीं कि रियाज जिंदा है या नहीं? सकीना के घर में यह घटना घटने से उसके मन में ड़र बैठ गया है | जिस कारण थोड़े-से हादसे से भी वह जल्दी सामान्य नहीं बन पाती |

उसके दिल में ड़र इतना समाया है कि वह अपनी बेटी के प्रति भी विश्वास बना नहीं पाती | उसकी जिंदगी दहशत से भरी है | ड़रे-सहमे बच्चों को माँ के प्यार दुलार से हिम्मत आ जाती हैं | लेकिन माँ को ही ड़रते देखकर उनके मन में ड़र और भी समा जाता है | 'सबीना के चालीस चोर' कहानी की सकीना के मन में जो दहशत है, जो ड़र है जिससे वह सबीना में हिम्मत बँधाने में असमर्थ बन जाती है |

3.13.स्वाभिमानी नारी :

अपने स्वाभिमान के लिए अपनी जिंदगी दाँव पर लगाने वाले बहुत से होते है | अपनी जिंदगी में स्वाभिमान के कारण बहुत नुकसान भी उठाते हैं | 'खुदा की वापसी' कहानी की फरजाना की जुबैर के साथ शादी हो जाती है | जुबैर शादी के बाद सुहाग रात के दिन ही फरजाना से कहता है कि "वह औरत शौहर के लिए मुबारक होती है जो पहली रात अपने शौहर का मेहर माफ कर दें | वह बड़ी पाक दामन समझी जाती है |"[21] पहली रात में ही वह फरजाना की 'मेहर' की रकम से छुटकारा पाना चाहता है | जिसके लिए वह कानून का भी वास्ता देता है और मजहब की सारी किताबें पढ़ने का भी दावा करता है |

जुबैर की बातें सुनकर फरजाना चौंक जाती हैं | कानून की किताबें न पढ़ने के कारण जुबैर की बातों पर भरोसा कर वह मेहर माफ कर देती है | लेकिन कुछ दिनों बाद जब फरजाना को पता चलता है कि जुबैर ने जो सुहाग रात के दिन बातें की थी वह सब झुठी थी | किसी भी कानूनी मजहब की किताबों में ऐसा लिखा नहीं है | जिससे मेहर माफ करने पर औरत पति के लिए पाकदामन समझी जाए | तब उसके स्वाभिमान को गहरी ठेंस पहूँचती हैं | शशिप्रभा लिखती है - "विवाह में जो स्त्री को आधार मिलता ही वह आर्थिक है, शारीरिक है, मानसिक और आत्मिक संबंधों में तो स्त्री को केवल समझौता करना पड़ता है |"[22] माता-पिता अपनी बेटी को आर्थिक, शारीरिक, मानसिक आधार देनेवाला पति ढूँढकर उसके साथ विवाह करते है | लेकिन बहुत बार नारी को ऐसा आधार देनेवाला पति नहीं मिलता | उसे सिर्फ समझौता करना पड़ता हैं | फरजाना ऐसा समझौता

करना नहीं चाहती | लेकिन पति की बातों में आकर वह अपनी मेहर की रकम माफ कर देती है | जुबैर झूठ का सहारा लेकर मेहर माफ करवाता है | मुस्लिम पुरूष नारी का शोषण करने नजर आते हैं | परिणामत: वह जुबैर के साथ प्यार नहीं करती और न ही उसे करीब ला पाती है | एक दिन जब वह जुबैर को सुहाग रात की बातों के बारे में पूछती है तब जुबैर उन घटनाओं को कबूल करता हैं कि वह बातें झूठी थी | लेकिन फिर भी फरजाना उसके साथ सामान्य जीवन नहीं जी सकती | वह मायके चली जाती है और जब तक न बुलाए तब तक मायके न आने को जुबैर से कहती है | मायके आकर भी वह सामान्य नहीं बन पाती और अपने स्वाभिमान को पहूँची ठेंस के कारण जुबैर को भी नहीं बुलाती | लेकिन हर दम वह जुबैर का इंतजार करती है | लेकिन दो-चार महिने गुजरने के बाद भी जुबैर उसे लेने नहीं आता | वह सोचती है - "स्वाभिमान का ताज उतारकर अधिकार की तलवार म्यान में खोंसकर वह आत्मसमर्पण क्यों नहीं कर देती | कानून की बनाई शनाब्दियों पुरानी जंजिरों को तोड़कर वह जो है उसी को स्वोकार क्यों नहीं कर लेती?"[23] वह स्वाभिमान छोड़कर अधिकार के साथ जुबैर के घर नहीं जा पाती वह कानून को जानकर सत्य को स्वीकार नहीं कर पा रही थी |

अपने स्वाभिमान के कारण ही वह सास-ससुर, माता-पिता, भाई सभी के समझाने पर भी ससुराल वापस नहीं जाती | न ही जुबैर को बुला पाती | अपने स्वाभिमान के कारण ही भाई फिरोज से मायके रहने की इजाजत माँगती है और जुबैर से दूर हो जाती है |

नारी मुस्लिम हो तो भी वह नारी है | वह अन्याय, झूठ, फरेब को स्वीकार नहीं करती झूठ-फरेब का सहारा लेकर शोषण करने वाले पति को ठुकरा कर ऐसी नारी विद्रोह करती है | अपना जीवन-यापन और अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखती है |

3.14.मातृभूमि से प्रेम करनेवाली नारी :

मातृभूमि से दूर रहकर अपनी भूमि से प्रेम करनेवाली नारी नासिरा की कहानियों में दृष्टिगोचर होती है | 'मिस्टर ब्राउनी' कहानी की नायिका संतोष पति की नौकरी के कारण उसके साथ स्कॉटलैंड में रहने जाती है | लेकिन स्कॉटलैंड में सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी उसे अपने देश की याद आती है | वहाँ से जादा इज्जत पाने के बाद भी अपने देश में रहना पसंद करती है | स्कॉटलैंड में संतोष को किसी चीजों की कमी नहीं है | उसका पति भूरेलाल उसकी हर माँग पूरी करता हैं सिवाय भारत जाने

के | भारत में वेकारी, गरीवी, परिवारवालों का ऋण, वीमारी, रोटी के लिए जुझना जैसी समस्याएँ होते हुए भी संतोष भारत वापस जाना चाहती है | यहाँ पर घूट-घूटकर जीने से अच्छा वह अपने देश में इज्जत से जीना चाहती है|

उसे विदेश जवरदस्ती लाया गया है | उसका होनेवाला वच्चा स्कॉटलैंड में पैदा हो | स्कॉटलैंड में पैदा हुए वच्चे को अपने आप ब्रिटिश पासपोर्ट मिल जाता है | संतोष अन्य औरतों की तरह इस घर को अपना घर नहीं समझती और न ही इस देश को अपना देश मानती है | विदेश में आराम के वदले यहाँ के नरक में रहना वह जादा पसंद करती है| संतोष भूरेलाल से कहती है - " मैं यहाँ रूकनेवाली नहीं हूँ | भाई को लिख चूकी हूँ | इससे पहले की यह हमें निकाले हमको इज्जत से अपने देश लौट जाना चाहिए |"[24] कोई यहाँ से वाहर निकाले इससे पहले वह इज्जत से अपने देश लौटना चाहती है | भूरेलाल उसे लेकर नहीं जाता | इसलिए वह अपने भाई को वुलाती है | ताकि वह उसे भारत ले जाए | देश से प्रेम करनेवाले अपने देश को ही स्वर्ग समझते हैं | चाहे वहाँ पर कोई भी सुख - सुविधा क्यों न हो | फिर भी वह अपने देश में ही रहना पसंद करते हैं | आखिर अपना देश ही तो सवकुछ हैं |

3.15. पाश्चात्य नारी :

वदलते मानवीय मूल्य तथा आधुनिकता का सवसे वड़ा प्रभाव पाश्चात्यों के संबंध में दिखाई देता है | 'जोड़ा' कहानी की नायिका चित्रकार है | जो विदेश से भारत देखने आई है | वह सफल चित्रकार वनना चाहती है | जिसके लिए वह किसी भी प्रकार की कीमत चुकाने को तैयार है| वह अपनी माँ की अवैध संतान है | वह अपने सपने को पूरा करने के लिए चित्रकार का सहारा लेना चाहती है | जिसके साथ वह अनैतिक संवंध भी रखना कुछ गैर न मानकर उसके प्रति आकर्षित हो जाती है | अपना समय काटने के लिए वह पड़ोस की बिल्लियों को अपने घर लाती हैं | खिला-पिलाकर उनके साथ समय वीताती है | वह घर में अकेली रहती है| लेकिन शादी करके घर नहीं बसाती | एक ही मुलाकात में वह चित्रकार के साथ संवंध रखना चाहती है | अपने चारित्र्य, शील से भी महत्वपूर्ण वह अपना सपना समझती है | उस सपने को साकारने के लिए वह अच्छा वूरा नहीं सोचती | नैतिक-अनैतिक नहीं मानती | अपनी इच्छाओं की पूर्ति ही उसका लक्ष्य है |

संक्षेप में नासिरा की नारी विद्रोही, संघर्षशील और परंपरागत मर्यादाओं को तोड़कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व वनाए रखना चाहती है | अपने सपने खुद साकार करने के लिए वह संघर्षशील रहती है |

निष्कर्ष :

नारी के परंपरागत रूपों के अतिरिक्त माँ, वहन, सास, सौतन, विधवा नारी, स्वाभिमानी नारी, उद्योग-व्यवसाय करनेवाली नारी जैसे नए रूपों का भी सृजन नासिरा ने किया है | सौतन का नाम सुनते ही झगड़ा, फरेव, कूटनीति सामने आती है | लेकिन 'बावली' कहानी की सलमा अपनी सौतन को तकलीफ न हो इसलिए देहात में जाने का फैसला करती है | पारंपारिक विधवा नारी दूसरों पर निर्भर होती है | जबकि नासिरा की नायिका खुद नौकरी करके जीवन वीतानी है | अपनी बेटियों की खुशी के लिए अपने बेटें का त्याग सबसे वड़ा विद्रोह है | मातृभूमि से दूर रहकर सभी सुख-सुविधाएँ होते हुए भी संतोष अपने देश से प्रेम करती है |

नौकरी, व्यापार में सिर्फ पुरूषों का ही योगदान नहीं है | बल्कि नारी भी उसमें महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभा रही हैं | नारी अपना कर्तव्य जान गई है | तभी तो वह व्यापार-उद्योग में काम कर रही है | सिर्फ जन्म देनेवाली ही माँ नहीं होती | तो लालन-पालन करने वाली भी माँ होती है | मुलाखी को बचपन में अमतुल ने अपना दूध पिलाया है और आज मुलाखी अमतुल को मदद कर रहा है | याने कि 'जन्म देनेवाले से पालनेवाला वड़ा होता है' | अमतुल अपने चार बेटों के बावजूद सुलाखी को पाँचवा बेटा मानती है | दूसरों के प्रति आस्था और प्यार यहाँ परिलक्षित होता है |

'पत्थर गली' की फिरोज परंपराओं में इतनी पीस जाती है कि वह पत्थर-सी वन जाती है | वही पत्थर एक दिन पिघल जाता है | जिससे वह पागल हो जाती है | उसका पिघलना मोम का न होकर क्रोध का है | आसिया और पाशा आदर्श प्रेमिकाएँ है | जो अपने प्रेम के लिए वड़ी से वड़ी सजा या तकलीफ सहने को तैयार हैं | बेटी के रूप में चित्रित कुवरा और सुगरा अपने पिता को घर लाने के लिए अपमान सहने को भी तैयार है |

फरजाना स्वाभिमानी नारी है | जो झूठ के सहारे रचे संसार में नहीं रहना चाहती है | इसलिए वह ससुराल में न रहकर मायके चली जाती है | अत: नासिरा की मुस्लिम नारी पुत्र प्राप्ति के लिए आस तो लगा वैठी है | लेकिन स्वयं वच्चे को जन्म न दे

पाती है; तो अपने पति की दूसरी शादी करा देती है | चाहे उसे भविष्य में यातनाएँ क्यों न झेलनी पड़े | नासिरा द्वारा चित्रित नारी हिम्मतवाली है | अत्याचारों को झेलने के पश्चात् वह हिम्मत नहीं हारती | आनेवाली रह मुश्किल का डटकर सामना करती हैं |

संदर्भ :

1. मधुमती - दिसंबर 2007, पृष्ठ-34
2. आधुनिक हिंदी कहानी - डॉ.सिन्हा रघुवीर, पृष्ठ-24
3. शीर्ष कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-35
4. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-20
5. वही, पृष्ठ-23
6. मनु: स्मृति, पृष्ठ-2 से 145
7. कृष्णा सोबती का उपन्यास साहित्य : नारी के विविध रूप - डॉ. अंतरेड्डी सुलोचना, पृष्ठ-67
8. करील के काँटे - संतोष दीक्षित, पृष्ठ-83
9. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-23
10. वही, पृष्ठ-28
11. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में समाज-जीवन - डॉ.चिकुर्डेकर प्रकाश, पृष्ठ-153
12. शामी कागज - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-53
13. साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूप - डॉ. वर्मा विमल, पृष्ठ-53
14. आधुनिक आंदोलन और आधुनि हिंदी साहित्य - मिश्र कृष्णविहारी, पृष्ठ-28
15. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-81
16. वही, पृष्ठ-82
17. कृष्णा सोबती का उपन्यास साहित्य : नारी के विविध रूप -डॉ.सुलोचना अंतरेड्डी, पृष्ठ-81
18. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ- 121
19. वही, पृष्ठ-124
20. शीर्ष कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-132

21. वही, पृष्ठ-159

22. नावे - शास्त्री शशिप्रभा, पृष्ठ-183

23. शीर्ष कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-183

24. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-88

BARR. BAL... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR